40.0 हिंदी शोध का स्वरूप एवं विकास: एक दृष्टि

- **शिवम् पाण्डेय,** शोधार्थी हिन्दी विभाग, बी०एस०एन०वी० पी०जी० कॉलेज, चारबाग, लखनऊ
  E-mail: spshivam925@gmail.com
- **डॉ प्रणव कुमार मिश्र,** प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी०एस०एन०वी० पी०जी० कॉलेज चारबाग लखनऊ

शोध सार

शोध एक अनुशासित अध्ययन प्रणाली है जिसका एक विधान या शास्त्र है। सोपाधिक शोध को अनुशासित रखने के लिए विश्वविद्यालय शोध – नियम लागू करते हैं और शोधार्थी को शोध- प्रविधि या शोधशास्त्र का बोध और पालन कराने के लिए प्रत्येक शोधार्थी को एक शोध- निर्देशक के निर्देशन में शोध कार्य करना पड़ता है। शोध एक सुविज्ञ निर्देशक के निर्देशन में शोध-प्रविधि का सम्यक पालन करने वाले प्रतिभाशाली शोधार्थी द्वारा किसी निश्चित विषय पर किया गया एक दृष्टि संपन्न विश्लेषण विवेचन है, जिसमें तथ्य अनुसंधान के स्तर पर अज्ञात तथा अल्प ज्ञात तथ्यों का अन्वेषण एवं भ्रांतज्ञात तथ्यों का संशोधन होता है। इसमें सत्यान्वेषण के स्तर पर तथ्यों के वर्गीकरण एवं विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष या सत्य तक पहुंचने की वस्तुनिष्ठ एवं तर्कसम्मत साधना समाहित होती है। प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य शोध के स्वरुप और उसके विकास पर दृष्टिपात करते हुए शोध की अवधारणा को शोधर्थियों के मध्य उसके वास्तविक स्वरुप की पहचान कराना है। जिसके माध्यम से शोध के प्रत्येक पहलुओं पर विचार किया गया है।

प्रमुख शब्द : *शोध, विश्वविद्यालय, अन्वेषण, अनुसंधान, गवेषणा, तथ्य आदि।*

शोध शब्द का अर्थ

रिसर्च शब्द के अर्थ के रूप में शोध, खोज, अन्वेषण, गवेषणा, अनुसंधान आदि अनेक शब्द प्रचलित हो रहे हैं। विभिन्न भाषा में रिसर्च के पर्याय के रूप में अलग-अलग शब्दों का प्रयोग होता है। खोज शब्द में कुछ नया खोजने की प्रेरणा उतनी नहीं है जितनी अज्ञान की परतों में लुप्त गुप्त तथ्यों या तत्त्वों को ढूंढ निकालने की प्रवृत्ति निहित है । खोज शब्द सामान्य भाषा का है इसमें पारिभाषिक स्तर तक उठने का दम नहीं है। इससे निर्मित खोजी, खोज ग्रंथ या खोज प्रबंध शब्द बहुत ही हास्यास्पद प्रतीत होते हैं। अन्वेषण शब्द 'इष्' धातु में 'अनु' उपसर्ग तथा 'ल्युट्' प्रत्यय के योग से बना है। अन्वेषण का अर्थ है 'खोजना' या 'आविष्कार करना'। अतः अन्वेषण शब्द में नूतन वैज्ञानिक खोज या अविष्कार का आशय निहित होने के कारण इसकी अर्थवत्ता सीमित है। यह के शब्द तत्त्व या सत्य के अनुसंधान के स्तर और अर्थ को उजागर नहीं कर सकता। इससे निर्मित अन्वेषक और अन्वेषक-प्रबंध शब्द भी अभीष्ट आशय की अभिव्यक्ति करने में असमर्थ हैं। इसी तरह गवेषणा शब्द की उत्पत्ति दो प्रकार से हुई है प्रथम व्युत्पत्ति के अनुसार गवेषणा शब्द 'खोजने' या 'चाहने' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। गवेषणा की व्युत्पत्ति इस प्रकार है। गो+'इष्'+णिच्+युच्+टाप्। वैदिककालीन अर्थ गाय की इच्छा या खोज होता है। कालांतर यह शब्द अपना विशिष्ट अर्थ (गाय की खोज) खोकर सामान्य अर्थ (खोज) में प्रयुक्त होने लगा। दूसरी व्युत्पत्ति के अनुसार गवेषणा शब्द ' गवेष्' धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ है 'खोजना' या "कठोर परिश्रम करना'। संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ के अनुसार की 'गवेषणा' की व्युत्पत्ति है गवेष् + णिच्+युच्+टाप्। इस प्रकार गवेषणा शब्द भी खोज की भांति स्थूल और सतही अर्थ का बोधक है। इसमें गंभीर चिंतन-मनन और विश्लेषण की कोई प्रेरणा का अनुरोध नहीं है। इससे निर्मित शब्द गवेषक, गवेषणा-प्रबंध भी अटपटे प्रतीत होते हैं। रिसर्च के पर्याय के रूप में हिंदी में 'अनुसंधान' शब्द विशेष प्रचलित रहा है। सन् 1960 तक 'अनुसंधान' शब्द 'शोध' की अपेक्षा अधिक व्यवहार में आता रहा है।

डॉ0 नगेंद्र ने 'अनुसंधान' शब्द को 'रिसर्च' के लिए मानक रूप में ग्रहण करने की संस्तुति की थी। ऐसी स्थिति में इस प्रसंग में एक शब्द का व्यवहार सब हो जाना चाहिए और अनुसंधान शब्द को ही व्यापक पारिभाषिक रूप दे देना चाहिए।

अनुसंधान शब्द 'धा' धातु में अनु और सम् उपसर्गों तथा ल्युट प्रत्यय लगाने से बना है। 'धा' धातु का अर्थ है रखना, स्थिर करना, स्थापित करना आदि। अनुसंधान का कोशगत अर्थ है खोज, सूक्ष्म निरीक्षण, परीक्षण, जांच-पड़ताल आदि। अनुसंधान शब्द उच्चारण की कठिनता के कारण यह बहुत लोकप्रिय नहीं हो सका और शोध के लिए अपना स्थान छोड़ता गया। रिसर्च के पर्याय के रूप में सर्वाधिक प्रचलित एवं सर्वस्वीकृत शब्द शोध है। शोध शब्द 'शुध्' धातु में धण प्रत्यय लगाने से बनता है। शुध धातु का अर्थ है सुधारना, शंकाओं का निराकरण करना, शुद्ध करना। इससे निर्मित संज्ञा 'शोधन' का अर्थ है शुद्ध या पवित्र करना, दुरुस्त करना, छानबीन, जांच, अनुसंधान शोधन में सम उपसर्ग के सहयोग से संशोधन शब्द निर्मित होता है, जिसका कोशगत अर्थ है शुद्ध करना, सुधारना, संस्कार करना आदि।

स्पष्ट है कि शोध में शोधन और संशोधन के साथ अनुसंधान के निहितार्थ भी भली प्रकार समाहित हैं। शोध शब्द संस्कार परिष्कार के आशय के साथ खोजने, मनन, चिंतन करने, जांचने परखने के अभिप्राय को भी अपने कलेवर में समेटे हुए है। हिंदी में 'शोध' शब्द खोजने की क्रिया से लेकर सूक्ष्म चिंतन मनन और परीक्षण की क्रियाओं तक के आशय को अपने भीतर समाहित किए हुए हैं। इस प्रकार संक्षेप में 'शोध' शब्द के तीन अर्थ स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आते हैं...

1- नए तथ्यों की खोज करना
2- खोजें हुए तथ्यों या तत्त्वों का संशोधन करना
3- खोजें हुए तथ्यों या तत्त्वों का मंथन और मूल्यांकन करना

'शोध' 'अनुसंधान' के समान या उससे भी अधिक अर्थ-व्यंजक है। अर्थ-गाम्भीर्य के साथ ही इसकी सबसे अनूठी विशेषता इसका आकार में छोटा होना है। इसके आकार लघु होने और उच्चारण में सुगमता के कारण इसे सबने स्वीकार कर लिया। लघु आकार और गहन अर्थवाहकता के कारण शोध शब्द के प्रयोग में वृद्धि हुई है और इसे रिसर्च के पर्याय के रूप में सर्वाधिक स्वीकार और ग्राह्य बना दिया है। सभी विश्वविद्यालय और शोध संस्थानों में यही शब्द रिसर्च की मानक के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। आकार की लघुता के कारण इस से निर्मित अन्य शब्द शोधक, शोधार्थी, शोध कार्य, शोध-प्रबंध, शोध-गोष्ठी, शोध-लेख, शोध-सामग्री, शोध विषय, शोध निष्कर्ष आदि भी नितांत सुगम और सर्वग्राह्य बन गए हैं। इसलिए शोध शब्द अब रिसर्च के अर्थ में रूढ़ हो गया है। वर्तमान समय में शोध का आयाम एवं शोध के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदलता जा रहा है और इस वजह से नित नए-नए पहलू विकसित होते जा रहे हैं। निकट भविष्य में इसमें और भी बदलाव संभावित हैं। इसलिए शोधकर्ता द्वारा विषय चयन करते समय विषय की प्रासंगिकता के बारे में अवश्य ध्यान देना चाहिए। चयनित विषय द्वारा प्रदत्त परिणाम किसी न किसी समस्या के समाधान रूप हो यह अति अनिवार्य होता है।

शोध की परिभाषा

शोध को अंग्रेजी में रिसर्च (Research) कहा जाता है। रिसर्च शब्द मूल रूप से लैटिन भाषा के 'Re' अर्थात दोबारा और 'search' अर्थात खोज से बना है। इस तरह शोध में वैज्ञानिक पद्धति द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का निरंतर प्रयास किया जाता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शोध को अपने शब्दों में परिभाषित करते हुए लिखा है कि रिसर्च में 'रि' उपसर्ग उतना पुनर्थक नहीं, जितना पौनः पुनिक अभिनिवेश और गंभीर प्रयत्न का द्योतक है। स्थूल अर्थों में वह नवीन और विस्मृत तथ्यों का अनुसंधान है, जिसको अंग्रेजी में 'डिस्कवरी ऑफ़ फैक्ट्स' कहते हैं और सूक्ष्म अर्थों में वह ज्ञात साहित्य के पुनर्मूल्यांकन और नवीन व्याख्याओं का सूचक है। "आचार्य द्विवेदी जी की परिभाषा में कई तथ्य निहित है। प्रथम बिंदु तो यह है कि रिसर्च का अर्थ खोजें हुए तथ्यों या तत्त्व को नए ढंग से दुबारा खोजना नहीं है। 'रि' उपसर्ग दोबारा खोजने का द्योतक नहीं है, वरन वह विषय में पूरी प्रतिभा के साथ गहराई से गोता लगाने का सूचक है। द्वितीय बिंदु के रूप में उन्होंने शोध के दो आयामों का उल्लेख किया है। प्रथम स्तर स्थूल है तो दूसरा सूक्ष्म स्थूल स्तर पर शोध तथ्यानुसंधान है। तथ्य पुराने भी हो सकते हैं और नए भी। सूक्ष्म स्तर पर शोध तत्त्व

बोध या तत्वानुसंधान है। इसमें ज्ञात सामग्री का नवीन अर्थ-निर्वचन या मौलिक व्याख्या के साथ ही पुनर्परीक्षण और पुनर्मूल्यांकन निहित होता है। इस प्रकार शोध की प्रक्रिया स्थूल तथ्यानुसंधान से सूक्ष्म तत्वान्वेषण की दिशा में उन्मुख रहती है। तथ्य मंथन के माध्यम से तत्त्व या सूक्ष्म निष्कर्ष या विचार में परिणत हो जाते हैं।

आचार्य विनय मोहन शर्मा ने तथ्यानुसंधान और तत्वान्वेषण पर आधारित शोध की संक्षिप्त और सारपूर्ण परिभाषा देते हुए लिखा है, "तात्पर्य है कि शोध ने तथ्यों की खोज ही नहीं उनकी तर्क सम्मत व्याख्या भी है।"

डॉ देवराज उपाध्याय के अनुसार "कोई भी साहित्यिक सत्य जब परिष्कृत, प्रमाणित, संदेहरहित और तथ्य पूर्ण होकर सामने आता है, तब वह का परिणाम बनता है।"

रेडमैन और मोरी ने शोध का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है कि 'नवीन ज्ञान की प्राप्ति के व्यवस्थित प्रयत्न को हम शोध कहते हैं।

एडवांस लेर्नर डिक्शनरी ऑफ करंट इंग्लिश के अनुसार 'किसी भी ज्ञान की शाखा में नवीन तत्त्वों की खोज के लिए सावधानी पूर्वक किए गए अन्वेषण या जांच पड़ताल को शोध की संज्ञा दी जाती है।

लुंडबर्ग ने शोध को परिभाषित करते हुए कहा है कि 'शोध अवलोकित सामग्री का संभावि वर्गीकरण, साधारणीकरण एवं सत्यापन करते हुए पर्याप्त कर्म विषयक और व्यवस्थित पद्धति है'। शोध के अंतर्गत केवल नए तथ्यों एवं सिद्धांतों की खोज ही नहीं अपितु पुराने सत्य को नए ढंग से प्रस्तुत करना, पुराने सिद्धांतों को नवीन रूप प्रदान करना, पुराने तथ्यों को नए तरीके से स्पष्ट करते हुए उनके मध्य के अंतर संबंधों का विश्लेषण करना सम्मिलित है'।

सीसी क्रोफोर्ड (CC Crowford) ने शोध की परिभाषा देते हुए लिखा है कि "शोध को उन समस्याओं की अध्ययन विधि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिनके समाधान अंशतः या समग्रतः तथ्यों में से प्राप्त किए जाते हैं।" इसका अंग्रेजी मूल रूप इस प्रकार से है। "Research may be defined as a method of studying problems, whose solutions are to be derived partly or wholly from facts."

इस परिभाषा के विश्लेषण से निम्न बिंदु उभर कर सामने आते हैं....

1- शोध विवेचन की एक लक्ष्यनिष्ठ पद्धति है।
2- इसका लक्ष्य है शंकाओं, भ्रांतियों, अनिश्चयों, आदि के रूप में विद्यमान विषय संबंधी समस्याओं का निवारण और सत्य निर्धारण के रूप में तर्कसम्मत समाधान प्रस्तुत करना है।
3- भ्रम निवारण और सत्य निर्धारण तथ्यों के विश्लेशण के आधार पर किया जाता है।
4- यह आवश्यक नहीं कि तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर सभी समस्याओं के समाधान पूर्ण रूप से हो जाए। कई बार समस्याओं के समाधान पूरी तरह नहीं हो पाते हैं।

शोध का स्वरूप

सत्य की खोज करना मानव की जन्मजात और प्रवृत्ति रही है। इसलिए मनुष्य अत्यंत प्राचीन काल से ही शोध की खोज की दिशा में हमेशा प्रयत्नशील रहा है। नाट्यशास्त्र', 'कामसूत्र', 'अर्थशास्त्र', 'काव्यप्रकाश' आदि ग्रंथ विविध दिशाओं में सत्य की खोज के लिए किए गए प्रयत्नों के उदाहरण हैं। किंतु प्राचीन शोध और आधुनिक शोध में स्वरूपगत भेद है जो मुख्यतः नव-विकसित शोध प्रवृत्ति के कारण है। आधुनिक युग में नवीन शोध प्रविधि के विकास ने ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। अब शोध ने व्यवस्थित और वैज्ञानिक स्तर अर्जित कर लिया है। तथ्यानुसंधान प्रमाणीकरण पर आधारित है और तथ्यों का विवेचन विश्लेषण वस्तुनिष्ठ या तथ्यआधारित तर्कपद्धति पर निर्भर करता है। शोध में प्रमाणीकरण के लिए उद्धरण देने और उनका संदर्भ

उल्लेख करने का निश्चित प्रावधान बन गया है। प्राचीन काल में इसके लिए कोई विधिवत व्यवस्था नहीं थी। शोध एक निर्धारित विधान या शास्त्र है। शोधशास्त्रीय विधान के अनुरूप किए गए स्तरीय और प्रमाणिक शोध कार्यो पर विश्वविद्यालयों द्वारा भाषा संकाय में एम. फिल., पीएच. डी., डी. लिट्र. आदि उपाधियां दी जाती हैं। विशुद्ध पारिभाषिक या तकनीकी स्तर पर कहे तो शास्त्रीय सोपाधिक शोध ही वास्तविक शोध है। ऐसा शोध कार्य मूल्यांकन या परीक्षण के उपरांत उपर्युक्त उपाधियों में से किसी एक उपाधि के लिए प्रदान किया जाता है और बाद में विश्वविद्यालय की स्वीकृति मिलने पर इसे प्रकाशित भी किया जाता है। सोपाधिक शोध के समानांतर निरूपाधिक शोध भी निरंतर चलता रहता है परंतु इसका कोई विशेष मूल्य नहीं होता है। इनमें से कुछ विशेष मूल्यवान भी है तथापि शोध प्रविधि का विधिवत पालन ना करने के कारण ऐसे कार्यों को शोध कार्य नहीं कहा जाता। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन आदि विद्वानों ने अपने स्तर पर अपने ढंग से अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का प्रणयन किया है, किंतु उन ग्रंथों को शोध प्रबंध नहीं कहा जा सकता। इन ग्रंथों के प्रणेताओं को डॉ. भी नहीं कहा जा सकता, भले ही उन्होंने अपने उच्च स्तरीय कार्य के लिए अनेक उपाधिधारियों से भी कहीं अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की हुई हो।

शोध की अपनी एक मर्यादा है। यह बात अलग है कि अब दिन प्रतिदिन उस मर्यादा का क्षरण होता जा रहा है। सोपाधिक शोध के विषय में विश्वविद्यालयों द्वारा निर्धारित नियमों के अवलोकन से शोध के स्वरूप में निम्नलिखित पक्षों पर प्रकाश पड़ता है....

- शोध में नवीन तथ्यों की खोज अपेक्षित है।
- तथ्याख्यान की नई दृष्टि शोध में होना जरूरी है।
- शोध में समीक्षात्मक परीक्षण और निर्णय क्षमता भी अपेक्षित है।
- शोध प्रबंध की प्रस्तुति के लिए संतोषप्रद उपस्थापन शैली भी वांछित है।

इन सब बिंदु के संयोजन से शोध के स्वरूप पर प्रकाश पड़ता है कि शोध तथ्याश्रित तत्त्व-बोध की दृष्टि-संपन्न, तर्क सम्मत क्रिया है, जिसमें शोधार्थी की तथ्यों के सही संकलन, परीक्षण और आख्यान की क्षमता के साथ ही निभ्रांत निर्णयों या निष्कर्ष पर पहुंचने वाली प्रतिभा का प्रमाण मिलता है तथा विषय के प्रतिपादन की भाषा और शैली के स्वच्छ और सुग्राह्य होना अपेक्षित होता है। शोध कार्य से संबंधित कुछ विशेष शब्दों थीसिस, डॉक्टर, परिकल्पना, (हाइपोथीसिस) आदि के अर्थ पर विचार करने से भी शोध के स्वरूप को समझने में सहायता मिलती है। इस क्रम में हम सबसे पहले थीसिस शब्द पर विचार करेंगे। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, परिकल्पना अथवा प्राकल्पना को स्थापना के रूप में प्रतिष्ठित करना ही थीसिस है।

थीसिस को हिंदी में शोध-प्रबंध कहते हैं। शोधार्थी पहले अपने अनुभव और अनुमान के बल पर या निर्देशक के परामर्श से एक परिकल्पना को लेकर विषय में प्रवेश करता है और उसे तथ्यों से प्रमाणित कर देता है। तथ्यों से प्रमाणित होते ही वह परिकल्पना स्थापना या थीसिस बन जाती है। उदाहरण के लिए हम निर्गुणोपासक कबीर के संबंध में एक विषय चुनते हैं 'कबीर के काव्य में सगुणोपासना का स्वरूप। प्रथम दृष्टि में यह परिकल्पना बिल्कुल अटपटी लगती है, किंतु गंभीर अध्ययन से कबीर के काव्य में भक्ति और रहस्यानुभूति के दोहों में माता-पिता, स्वामी, प्रियतम के रूप में ब्रह्मा के सगुण रूप के अनेकानेक तथ्य प्रचुर रूप में मिलने लगते हैं। तथ्यों के आधार पर हम यह सिद्ध करने में सफल होते हैं कि निर्गुण उपासक कबीर के काव्य में सगुणोपासना के प्रसंग निर्गुणोपासना के प्रसंगों से कहीं अधिक भावपूर्ण और मार्मिक है। ऐसी स्थिति में हमारी परिकल्पना सही सिद्ध हो जाती है और तथ्यों से प्रमाणित होकर वह स्थापना या थीसिस में परिणत हो जाती है। शोध उपाधि प्राप्त शोधार्थी को डॉक्टर कहा जाता है। शुरुआत में धार्मिक ज्ञान को ही सच्चा ज्ञान माना जाता था। अतः डॉक्टरेट की उपाधि भी उसी व्यक्ति को दी जाती थी जो धर्म ग्रंथों के गहन अध्ययन तथा आचार-विचार की व्यक्तिगत पुनीतता के कारण धर्माचार्य के रूप में प्रतिष्ठित होता था। ऐसे धर्माचार्य को 'डॉक्टर ऑफ डिविनिटी' की उपाधि प्रदान की जाती थी। बाद में उन सभी मनस्वी विद्वानों को भी डॉक्टर कहा जाने लगा जो ज्ञान विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में वर्षों तक साधनारत रहते हुए अपनी मौलिक मान्यताओं से युक्त ग्रंथ पर किसी

विश्वविद्यालय से पीएचडी। डीएससी । आदि में से कोई उपाधि प्राप्त करता था। डीएससी (डॉक्टर ऑफ साइंस) विज्ञान के क्षेत्र से संबंधित है, किंतु पीएचडी विज्ञान और मानविकी दोनों ही क्षेत्रों में प्रदान किया जाता है। इस संदर्भ में 'फिलासफी' शब्द लाक्षणिक है। यह दर्शन का बोधक न होकर दार्शनिक के समान उच्चस्तरीय तत्त्व-चिंतन का द्योतक है। यह उत्कृष्ट मौलिक एवं चिंतन का व्यंजक है। मानविकी के क्षेत्र में पीएच. डी. से उच्चतर उपाधि डी. लिट्. कैंब्रिज यूनिवर्सिटी की परंपरा के अनुसार 'डॉक्टर ऑफ लिटरेचर' का संक्षिप्त रूप है। 'लिट्रेचर' अथवा 'लैटर्स' शब्द लाक्षणिक रूप में उच्चस्तरीय ज्ञान-साधना अथवा साहित्य साधना के गंभीर अर्थों में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार थीसिस', 'शोध-प्रबंध', 'डॉक्टर' फिलासफी आदि शब्द तत्त्वान्वेषी दृष्टि, सूक्ष्म विश्लेषण क्षमता के साथ ही 'शोध' के दायित्व को रेखांकित करते हैं।

हिंदी शोध का इतिहास एवं विकास

हिंदी शोध के इतिहास की जानकारी सर्वप्रथम हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा पर विदेशी विश्वविद्यालयों में हुए शोध कार्यों से प्राप्त होती है। हिंदी शोध पर कार्य करने वाले प्रथम शोधकर्ता है भी अहिंदीभाषी लोग ही थे। हिंदी के क्षेत्र में हुए शोध आरंभिक शोध ग्रंथ, विषय विस्तार, विश्लेषण स्थूलता, विवेचन शैली की साहित्यिकता तथा समन्वित शैली तथा शोध व्यवस्था की अनिश्चितता के कारण परवर्ती शोध कार्यों के स्वस्थ, प्रगतिशील तथा आदर्श शोध मार्ग प्रशस्त करने में असमर्थ रहे हैं।

1. हिंदी के क्षेत्र में प्रथम शोध फ्लोरेंस विश्वविद्यालय के स्नातक श्रीयुत लुइजि पिओ तेसीतरी ने सन् 1911 ई. में इटैलियन भाषा में 'इल रामचरितमानस ए इल रामायण विषय पर एक लेख लिखकर किया इस लेख की बहुत प्रशंसा हुई। इस लेख के लिए तेसीतरी को शोध उपाधि प्राप्त हुई।
2. दूसरा शोध कार्य लंदन में सन् 1918 में श्री जे. एन. कारपेन्टर ने द थियोलॉजी ऑफ तुलसीदास (तुलसीदास का धर्म दर्शन) विषय पर प्रस्तुत किया।
3. तीसरा शोध प्रबंध हिंदुस्तानी फॉनेटिक्स सन् 1930 में मोहिउद्दीन कादरी जी द्वारा प्रस्तुत किया गया। यह उर्दू भाषा में प्रमाणित शोध ग्रंथ रहा लंदन विश्वविद्यालय से उक्त विषय में उपाधि प्राप्त की।
4. श्री बाबूराम सक्सेना ने सन् 1971 ई में 'इवोल्यूशन ऑफ अवधि (अवधि का विकास) विषय पर प्रयाग विश्वविद्यालय में शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। इस शोध विषय पर उनको डी. लिट की उपाधि प्रदान की गई। पहला हिंदी का शोध प्रबंध था जो किसी हिंदी विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया गया था।
5. सन् 1934 ई में श्री पीतांबर दत्त बड़थ्वाल ने हिंदी विश्वविद्यालय काशी में 'द निर्गुण स्कूल ऑफ हिंदी पोएट्री' (हिंदी काव्य में निर्गुण संप्रदाय) शोध प्रबंधन पर डी लिट की उपाधि प्राप्त की थी यह हिंदी विषय पर हिंदी विभाग में प्रस्तुत प्रथम शोध प्रबंध माना जाता है।
6. सन् 1934 ईस्वी में जनार्दन मिश्र नें सूरदास का धार्मिक काव्य शोध विषय पर कोनिग्सबर्ग विश्वविद्यालय से शोध उपाधि प्राप्त की थी।
7. श्री धीरेंद्र वर्मा का शोध प्रबंध द लॉगव्रज (ब्रजभाषा) सन् 1935 ई में पेरिस विश्वविद्यालय से डी. लिट की उपाधि के लिए स्वीकृत किया गया । "

सन 1911 से 1935 तक कुल 7 शोध प्रबंधन प्रस्तुत किए गए जिसमें से 5 शोध विदेशी, 2 शोध उपाधियों हिंदी विश्वविद्यालय में, 3 शोध प्रबंध में डी. लिट की उपाधि मिली। हिंदी शोध का द्वितीय काल सन 1935 से 1947 तक माना जाता है। इसे हिंदी शोध का विकास काल कहते हैं। इसी समय काशी, प्रयाग, नागपुर, पंजाब और आगरा जैसे 5 विश्वविद्यालयों में दी, भाषा, साहित्य, संस्कृति, काव्यशास्त्र, काव्यधारा पर शोध कार्य संपन्न हुऐ । में कोलकत्ता 47 से 1946, पटना और लखनऊ में शोध कार्य शुरू हुए। इन सभी विश्वविद्यालयों में कुल शोध प्रबंधन लिखे गए। यह शोध कार्य विषय निर्वाचन 29, तथ्य नियोजन तथा शोध तकनीकी दृष्टि से प्रथम काल के शोध कार्यों से अधिक स्पष्ट निश्चित तथा श्रेयस्कर हैं। दूसरे काल के शोध अधिक

प्रमाणिक तथा वैज्ञानिक हैं।

स्वतंत्रता के बाद 1948 से हिंदी शोध का विस्तार काल शुरू होता है। आजादी के बाद भारतीयों में अध्ययन अध्यापन की अभिरुचि का निर्माण हुआ। हिंदी राष्ट्रीय भाषा बनने की ओर आगे बढ़ी तो हिंदी के क्षेत्र में शोध छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई। बहुत से हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। पटना और प्रयाग विश्वविद्यालय में एक प्रश्न पत्र एम.ए हिंदी अनिवार्य कर दिया गया। हिंदी में संपन्न शोध कार्य द्वारा भारतीय संस्कृति के सजातीय तथा निजातीय रचना सूत्र स्पष्ट तथा स्थापित किए जा सकते हैं। इस काल में ही अन्तर्विधायी शोध कार्यों का शुभारंभ भी हुआ अन्तर्विधायी शोध को दो भागों में बांटा गया है।

1. **हिंदी साहित्यानुसंधान**
2. **हिंदी भाषानुसंधान**

हिंदी साहित्यानुसंधान को साहित्य तत्वों, प्रवृत्ति तथा प्रभावों के आधार पर विभिन्न भागों में बांटा जा सकता है हिंदी भाषानुसंधान के पांच अंग-ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य तथा अर्थ हैं। हिंदी साहित्य तथा भाषा का वर्णनात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक तथा क्षेत्रीय आधार पर शोध कार्य किया जा सकता है। इस शोध में मनोभाषावैज्ञानिक, समाजभाषावैज्ञानिक तथा राजनीतिक भाषावैज्ञानिक शोधकार्य के लिए उपयुक्त स्थान है।

इसी अवधि में काव्यशास्त्रीय, जीवन वृत्तीय प्रभावपरक, सांस्कृतिक, शैली वैज्ञानिक आदि शोध कार्यों का आरंभ हो गया है। प्रवृत्तिपरक, व्यक्तित्व कृतित्व संबंधी, समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, विशिष्ट साहित्यकार, रचनाओं के संबंध में पर शोध कार्य भी हो रहे हैं।

उपयुक्त शोध कार्य को दो भागों में बांट सकते हैं।

1. **स्वाधीनता पूर्व के शोध कार्य**
2. **स्वाधीनता पश्चात के शोध कार्य**

प्रथम प्रकार के शोध कार्य गुणात्मक दृष्टि से उत्तम होते हुए परिमाणात्मक दृष्टि से सीमित हैं। वहीं दूसरे का प्रकार के शोध कार्य में विषय की भरमार रही है भक्तिकालीन विषयों पर सर्वाधिक शोध हुए हैं। तुलसी पर संतोषजनक शोध कार्य हुए, कहानी, नाटक, एकांकी, आलोचना, निबंध यात्रा साहित्य और पत्रकारिता आदि पर भारतवर्ष में शोध कार्य हो रहे हैं।

शोध का उद्देश्य

- शोध एक तर्कपूर्ण तथा वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है जिससे प्राप्त निष्कर्ष तार्किक तथा वास्तविक आंकड़ों पर आधारित होते हैं तथा यह व्यक्तिगत पक्षपात से मुक्त होता है। इसलिए शोधार्थी का पहला उद्देश्य यही होना चाहिए कि अपने शोध की तर्करहित बनाए और व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से अपने शोध कार्य को मुक्त रखे।
- किसी भी शोध का उद्देश्य किसी नए तथ्य, सिद्धांत, विधि या वस्तु की खोज करना है अथवा किसी प्राचीन तथ्य, सिद्धांत, विधि या वस्तु को परिवर्तित करना है।
- यह एक उद्देश्य पूर्ण बौद्धिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी सैद्धांतिक अथवा व्यावहारिक समस्या का समाधान किया जाता है तथा इन समस्याओं के समाधान हेतु विशिष्ट उपकरणों तथा प्रक्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।
- शोध में उद्देश्य की पूर्ति हेतु आंकड़ों से जानकारी एकत्रित की जाती है जो कि प्राथमिक अथवा माध्यमिक स्रोतों से एकत्र किए जाते हैं। इन आंकड़ों के द्वारा शोध प्रबंध में तथ्यों को प्रामाणिकता के साथ उजागर किया जा सकता है।
- एक उद्देश्य पूर्ण शोध में आंकड़ों के संग्रहण के उपरांत इनका विश्लेषण किया जाता है जिसके लिए कई परिकल्पनाओं का निर्माण एवं परीक्षण किया जाता है।

- आंकड़ों के विश्लेषण में सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया जाता है जो आंकड़ों की प्रकृति तथा चयन प्रतिदर्श पर निर्भर करता है।
- शोध द्वारा प्रदत ज्ञान सत्यापित होता है क्योंकि किया गया विश्लेषण नियंत्रित तथा वस्तुनिष्ठ होता है।
- शोध कार्य में उद्देश्य की पूर्ति हेतु वैज्ञानिक विकल्पों का भी प्रयोग किया जाता है।
- आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए विश्वसनीय तथा वैद्य उपकरणों का उपयोग किया जाता है।
- शोध से प्राप्त परिणामों तथा संबंधों की पुरावृति की जाती है, जिससे सदैव सुनिश्चित निष्कर्ष उपलब्ध हो सके।
- शोध से प्राप्त ज्ञान का अभिलेखन तथा प्रतिवेदन सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए, जिससे उस क्षेत्र में होने वाले शोध कार्य के लिए वह भविष्य में सहज रूप से उपलब्ध हो सके। शोध के परिणामों का प्रकाशन इस दृष्टि से उत्तम रहता है।
- पूरानी और वर्तमान स्थिति की घटनाओं को जानने के लिए शोध कार्य किए जाते हैं।
- एक उद्देश्य पूर्ण शोध वही होता है जिसमें शोधकर्ता किसी नए तथ्य की खोज करता है या फिर पुराने सत्य को नए ढंग से खोजने में सफल होता हो।
- शोध का उद्देश्य तथ्यों का तर्कगत स्पष्टीकरण देना और उनको प्रमाणित करना होता है। उद्देश्य के द्वारा ही शोध प्रबंध की रूपरेखा निर्मित होती है। जैसे शोध उद्देश्य होता है उसी के अनुकूल रूपरेखा बनाई जाती है।

हिंदी शोध की उपलब्धियां

हिंदी शोध के क्षेत्र में आजादी से पूर्व शोध प्रबंध बहुत कम मिलते हैं परंतु 1947 के बाद हिंदी शोध क्षेत्र में विकास बहुत तीव्र गति से देखने को मिला। एक हज़ार वर्षों से लंबे काल के हिंदी साहित्य को मात्र 70 वर्षों में पूर्ण नहीं किया जा सकता, यही कारण है कि 1947 के बाद विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग में शोधार्थियों की भरमार है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में रोज शोध ग्रंथ तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है। फिर भी हिंदी शोध क्षेत्र नित नवीन और ताजगी भरा है।

हिंदी के क्षेत्र में शोध कार्य 70-75 वर्षों से ही शुरु हुआ है इसीलिए इनमें इतने व्यापक स्तर पर शोध कार्य होना स्वाभाविक ही है। अन्य भाषा के स्थान पर हिंदी भारतीय भाषा होने के कारण इसमें अनेक सुविधा प्राप्त है, इसीलिए भारतीय विद्वानों द्वारा हिंदी साहित्य को अपना शोध क्षेत्र चयनित करना अधिक सुविधाजनक है अंग्रेजी माध्यम के अनुरूप हिंदी का शोधार्थी अधिक परिश्रम करता है अधिक स्रोत-ग्रन्थो को देखता, परखता है और मौलिक स्थापनाओं की अभिवृत्ति करता हैं यही हिंदी शोध की मुख्य उपलब्धि है।

हिंदी शोध कार्य की उपलब्धियां अनेक हैं। आजादी के बाद के वर्षों में अनेक नवीन कवि, हिंदी साहित्य, अज्ञात रचनाएं, प्रादेशिक लिपियों में लिखा काव्य खोजा जा चुका है। 70 वर्षों में ये नवीन खोजें इतनी बड़ी संख्या में सामने आई है कि विद्वानों को हिंदी काल को पुनः क्रमबद्ध करने की आवश्यकता जान पड़ती है। शोध में वैज्ञानिकता का के कारण में दिशाओं का उद्घाटन हुआ है। प्राचीन और मध्यकालीन हिंदी साहित्य क्षेत्र में शोधोपलब्धियों के अतिरिक्त हिंदी शोध की सर्वाधिक उपलब्धि आधुनिक साहित्य में हुई है। शायद हिंदी को कोई पक्ष ऐसा हो जिस पर शोधार्थियों की नजर ना गई हो। यही कारण है कि समीक्षक और अनुसंधित्सु दोनों नयी जमीन तोड़ने में विश्वास रखते हैं काव्या, नाटक और कथा साहित्य की विभिन्न विधाओं में वे अपने कौशल का परिचय दे रहे हैं इसलिए हिंदी शोध की उपलब्धियां भी बहुमुखी हैं।

हिंदी शोध की सीमाएं

शोधार्थी ज्ञान का उपासक है ज्ञान के विशुद्ध रूप का उपस्थापक है। जिस विषय पर शोध कार्य करता है उसे देखना होता है कि उन विषयों पर अब तक किस प्रकार का, कितना, किस दिशा में और किस पद्धति में कार्य हुआ है। शोधार्थी को शोध निमित गृहीत

विषय में अद्यावधि संपन्न कार्य को ध्यान में रखते हुए कुछ नया जोड़ना होता है। निर्वाचित विषय की ज्ञान चित्र की सीमाओं को विस्तृत करना होता है शोध का यह लक्ष्य हैं।

1. शोध के आकार का नियमन विषय निर्वाचन की प्रकृति तथा प्रकार्यता पर निर्भर हैं।
2. शोध का विषय साहित्यिक है तो आकार बहुत बड़ा होगा।
3. विषय काव्यशास्त्र, पाठानुसंधान या भाषा- विज्ञान पर तो आकार छोटा होगा।
4. हिंदी शोध में लिंग विधान का विस्तृत होगा ।
5. शोध की शैली वैज्ञानिक होनी चाहिए।
6. शोध समय, काल, लेखक निर्धारित होना चाहिए ।
7. शोध में प्रमाणित तथ्यों की मान्यता होती है।

शोध की सीमाएं शोध विषय द्वारा निर्धारित की जाती हैं शोध के विषय का सीधा प्रभाव शोध के आकार पर पड़ता है। इस प्रकार विषय, काल और लेखक शोध की सीमाएं हैं।

निष्कर्ष

शोध में इतनी बड़ी (5000 से ज्यादा) संख्या में शोध कार्य हो चुका है कि इन शोध कार्य में नित हिंदी भाषा का विस्तार हो रहा है। अपने 70 वर्ष के विस्तार में अभी तो आधे से भी कम हैं और अभी बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं जिन पर शोध कार्य किया जाना बाकी है कुछ विषय क्षेत्र ऐसे हैं जो नऐ शोधार्थी की राह देख रहे हैं परंतु रोज नए शोधों के कारण हिंदी भाषा नित नवीन होती जा रही है। शोध के विषयों के साथ उसकी सीमाएं भी निर्धारित करना जरूरी है ताकि शोध उबाऊ और बिखरा ना लगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

गणेशन, एस. एन. (2019). अनुसंधान प्रविधि: सिद्धांत और प्रक्रिया. लोकभारती प्रकाशन

त्रिपाठी, सत्येंद्र एवं श्रीवात्सव अनिल कुमार () सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय, इंडिगो बुक पब्लिशर

शर्मा, आर. एस. (2015). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्त्व एवं शोध प्रक्रिया. आर लाल बुक डिपो मेरठ

श्रीवास्तव, डी. एन. (2017). अधिगम का आंकलन एवं क्रियात्मक अनुसंधान. श्री विनोद पुस्तक मंदिर

दयाल, डॉ. मनोज, मीडिया शोध, हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण 2003,

सिंह, डॉ. तिलक, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, संस्करण 2010,

सहगल, डॉ.मनमोहन, हिन्दी शोधतंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, संस्करण 2008,